एसपीए में टैम्पल आर्किटेक्चर पर तीन दिनों की वर्कशॉप

हर 100 साल में बदलते नजर आते हैं इंडिया के मंदिरों के गवाक्ष

सिटी रिपोर्टर | स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर में '75 शेड्स ऑफ हैरिटेज' विषय पर चल रही तीन दिनी नेशनल कॉन्फ्रेंस में शनिवार को 56 रिसर्च पेपर्स प्रेजेंट किए गए। इसमें मुख्य रूप से हमारी ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर पर चर्चा हुई। इसमें तेजश्री ने हिंदी सिनेमा में दिखाई गई भारतीय धरोहर के प्रभावों पर चर्चा की। उज्जवला ने कंबोडिया के मंदिरों में भारतीय वास्तुकला के प्रभाव पर बात की।

इस मौके पर नंदिनी मुखोपाध्याय ने भारत में टैंपल टाउंस की अवधारण पर बात रखी। ग्वालियर से आईं वास्तुकला की स्टूडेंट श्रेय पटेरिया ने माप की प्राचीन इकाइयों पर रिसर्च पेपर किया, वहीं श्रुति कटारे ने वास्तु एवं उसकी वहनीयता पर बात की।

स्टूडेंट्स ने हैंडऑन प्रैक्टिस कर समझी मंदिर की डिजाइन

नेशनल कॉन्फ्रेंस के तहत आयोजित प्रदर्शनी में शनिवार को पजल गेम्स के जरिए स्टूडेंट्स को मंदिर की जालियों की डिजाइन्स तैयार करने का टास्क दिया गया। इसमें स्टूडेंट्स ने मंदिरों में बनी खूबसूरत जालियों को कैसे सेट किया जाता है, इसकी हैंड्स ऑन प्रेक्टिस करके देखा। टेक्निकल सेशान में शनिवार को मंदिर गवाक्ष निर्माण पर बात की गई। बताया गया कि किस तरह से मंदिर के गवाक्ष के डिजाइन इंडिया में हर 100 सालों के अंतराल पर बदलते नजर आए।